नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन के क्षेत्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(आई॰जी॰आई॰एम॰एस॰, पटना, 14.08.2016, 11.00 बजे पूर्वाह्न)

एम॰एस॰, पटना के निदेशक डॉ॰ एन॰ आर॰ विश्वास, एन॰एम॰ओ॰ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ॰ एम॰ सी॰ पटेल, संगठन के राज्य अध्यक्ष प्रो॰ चिरंजीव खण्डेलवाल, सचिव डॉ॰ शशिकान्त त्रिपाठी, प्रो॰ उमेश भदानी, डॉ॰ रंजीत कुमार, कार्यक्रम में उपस्थित चिकित्सकगण, मेडिकल एवं पारामेडिकल स्टाफ, मीडिया प्रतिनिधि, देवियों एवं सज्जनों !

'नेशनल मेडिकोज ऑर्गनाइजेशन' के इस क्षेत्रीय सम्मेलन के उद्घाटन के अवसर पर मैं इस संगठन के सभी पदाधिकारियों, सम्मेलन के आयोजकों तथा इस सम्मेलन में उपस्थित सभी सम्मानित चिकित्सकों एवं छात्रों को बधाई देता हूँ और आयोजन की सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

बिहार एक ऐसा राज्य है, जिसने कई क्षेत्रों में नये इतिहास का सृजन किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि छडव का इतिहास भी बिहार से ही शुरू हुआ और विगत वर्षों में अपने संगठन का विस्तार करते हुए छडव ने अलग सोच और कार्यक्रमों के आधार पर इस क्षेत्र में कार्यरत अन्य संगठनों से हट कर अपनी विशेष पहचान बनाई है । छडव ने चिकित्सा–शिक्षा और चिकित्सा–सेवा से जुड़ी समस्याओं के संबंध में ही आवाज नहीं उठाई, बल्कि एक समग्र एवं स्वस्थ जीवन–दृष्टि विकसित करने की दिशा में भी प्रशंसनीय काम किया है।

मित्रों पश्चिम से आए बाजारवाद और उपभोक्तावादी संस्कृति से हमें जो सुख और सुविधाएँ मिली हैं, उससे उपभोक्तावादी दृष्टि ने एक

तरफ अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति की उदारता का शोषण करते हुए उसका दोहन आरंभ किया । प्रकृति के सहज साम्राज्य में अत्यधिक मानवीय हस्तक्षेप ने उसके संतुलन को बिगाड़ा, तो भौतिक सुखों की दौड़ और होड़ में मनुष्य की अन्तः प्रकृति भी असंतुलन का शिकार हो गई । जीवन–दृष्टि बदलने लगी तो जीवन–चर्या भी बदली । उसके जीवन–मूल्यों में भी बदलाव आ गया। स्वार्थ केन्द्रित दृष्टिकोण ने व्यक्तिवाद को प्रश्रय दिया, सामूहिकता, सामाजिकता, लोकमंगल की भावना कम होती जा रही है । आज की पीढ़ियॉ पश्चिम से आयातित व्यक्ति–स्वतंत्रता की चेतना के कारण प्जश्े उल सपमि के दर्शन को अपना रही है। निजी सुख–स्वार्थ की इस दृष्टि ने जहाँ, रिश्तों को तोडा–मरोड़ा, वहीं भावात्मक संबंधों की संवेदनात्मक भूमि को बंजर करना शुरू कर दिया । स्वार्थपरता ने पारिवारिकता और सामाजिकता को इतना संकुचित कर दिया कि उसमें माँ–बाप के लिए भी जगह नहीं बची। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों पर भी व्यावसायिकता हावी हो गई। अर्थकारी दृष्टि ने इतना अनर्थ किया है कि अस्पतालों में दलाली, शोषण, नकली दवाएँ, भ्रूण–हत्याएँ और प्रोफेशनल लापरवाही के आपराधिक व्यवहारों की शर्मनाक खबरों से समाचार पत्र भरे रहते हैं।

इस संदर्भ में मुझे यह यह जानकर सचमुच बहुत खुशी हुई कि छडव् एक ऐसा संगठन है, जो इस क्षेत्र के अन्य संगठनों की तरह केवल चिकित्सा–सेवा और चिकित्सा–शिक्षा तथा चिकित्सकों की सेवा–शर्त्तों या उनके हित के लिए ही संघर्ष नहीं करता, बल्कि भारतीय आयुर्विज्ञान के समग्र एवं संतुलित दृष्टिकोण को अपनाते हुए स्वास्थ्य–सेवा के माध्यम से राष्ट्र के पुननिर्माण में चिकित्सकों की भूमिका सुनिश्चित करना चाहता है; स्वास्थ्य–चेतना को सामाजिक चिन्तन से जोड़कर उस निर्मम व्यावसायिकता से बचाकर मानवीय संवेदना की भूमि पर मानवता की

सेवा के रूप में स्थापित करना चाहता है; 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की कल्याणकारी सामाजिकता से जोड़ना चाहता है ।

मुझे बताया गया कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में स्वास्थ्य–प्रक्षेत्र के योगदान के साथ–साथ, आम आदमी में समग्र स्वास्थ्य की चेतना और जिजीविषा जगाने का लक्ष्य लेकर 1977 में बिहार में छडः की स्थापना की गई। तब से आज तक अपने दर्शन और उद्देश्यों के अनुरूप छडः अपने कई विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से इस क्षेत्र में कार्यरत है और देश के अनेक ख्यातिलब्ध चिकित्सक तथा बड़ी संख्या में छात्र भी इससे जुड़ते जा रहे हैं । मुझे बताया गया कि पिछले 15 वर्षों से एन एम ओ की ओर से पूर्वोत्तर भारत के विभिन्न प्रदेशों में 'धन्वतरि–यात्रा' तथा दो वर्षों से जम्मू–कश्मीर में ऋषि कश्यप यात्रा जैसे कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, जिसके अन्तर्गत मुफ्त चिकित्सा–शिविर लगाए जा रहे हैं । वर्ष में एक बार एक–डेढ़ सप्ताह के लिए देश भर के चिकित्सक और छात्र सेवा भाव से इन चिकित्सा शिविरों के माध्यम से उन प्रदेशों की गरीब जनता से जुड़ते हैं, उनके स्वास्थ्य की जॉच करते हैं, रोग–निवारण के प्रयास करते हैं और उन्हीं के घरों में ठहरते भी हैं। यही नहीं, बिहार के विभिन्न वनवासी जिलों में भी समय–समय पर चिकित्सा–शिविर लगाने का काम इस संगठन के माध्यम से किया जाता है। मेरे विचार से यह बहुत ही सराहनीय प्रयास है। इससे सेवा–भावना के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता और सदभावना के लक्ष्य की सिद्धि भी होती है।

इस संगठन के संवर्द्धन और सुदृढ़ता के लिए अपनी शुभकामनाएँ देते हुए, मैं इस बात के लिए आपकी सराहना किए बिना नहीं रह सकता कि आयुर्विज्ञान और स्वास्थ्य सेवा के प्रति भारतीय चिंतन और संस्कार का बीजारोपण करने के लिए छडः के सदस्यों को भारतीय आयुर्विज्ञान के पुरोधा–पुरूष महर्षि चरक के नाम से 'चरक शपथ'

दिलाई जाती है। वास्तव में इस शपथ के माध्यम से, सतत् सतर्कता, सेवा परायणता, निजी स्वार्थ और व्यावसायिकता से बचते हुए अपनी प्रतिभा, ऊर्जा और विद्या का उपयोग प्राणिमात्र के कल्याण के लिए करने का जो संकल्प लिया जाता है, वह इस पवित्र कार्य को एक श्रेष्ठता प्रदान करता है।

इस उदात्त लक्ष्य के साथ जीवन की व्यावहारिक सच्चाई भी एक प्रश्न उठाती है – वह प्रश्न है–अर्थोपार्जन का । जीवन के चार पुरूषार्थों–धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष में अर्थ एक महत्वपूर्ण पुरूषार्थ है। यह जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए महत्वपूर्ण उपादान है, किंतु पैसा सब कुछ नहीं है। पैसे से सांसे नहीं खरीदी जा सकतीं, आत्मीयता नहीं मिलती, सच्चे रिश्ते नहीं बनते, अपनापन नहीं पाया जा सकता।

छड॰ चिकित्सा–सेवा के पुनीत कार्य को सामाजिक और मानवीय आयाम देने के जिस कार्य में लगा है, आज के युग में उसकी बहुत आवश्यकता है।

इस अवसर पर आपके क्षेत्रीय सम्मेलन का विधिवत् उद्घाटन करते हुए मैं इस सम्मेलन की समग्र सफलता के साथ–साथ, इस संगठन की उत्तरोत्तर प्रगति की भी कामना करता हूँ। मेरी मंगलकामना है कि आप सभी सुखी रहें, स्वस्थ रहें, सानन्द रहें और अपने–अपने व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों से राष्ट्र की एकता और सामाजिक समरसता को मजबूती प्रदान करते रहें। ऐसे भव्य आयोजन के लिए आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद।

जय हिन्द !